International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(2): 30-34

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(2): 30-34
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-01-2020
Accepted: 23-02-2020

डॉ. श्रुतिकान्त पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, एमिटी संस्कृत अध्ययन एवं शोध संस्थान, एमिटी विश्वविद्यालय, सैक्टर 125, नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
डॉ. श्रुतिकान्त पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, एमिटी संस्कृत अध्ययन एवं शोध संस्थान, एमिटी विश्वविद्यालय, सैक्टर 125, नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत।

गौरवशाली अतीत और महत्त्वाकांक्षी भविष्य की भाषा के रूप में संस्कृत का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ. श्रुतिकान्त पाण्डेय

शोधसंक्षेप

संस्कृत अपने उद्भव से ही ज्ञान, सम्मान और विद्वत्समाज की भाषा रही है। गीर्वाणि, देववाणी, सुरभाषा से लेकर प्राचीनतम, सुव्यवस्थित और वैज्ञानिकभाषा जैसे गुणवाचक अभिधानों से स्पष्ट है कि यह अपनी उत्पत्ति से ही सर्वोत्कृष्ट, तार्किक और सक्षम माध्यम रही है। आज के नितपरिवर्तनशील संसार में भी संस्कृत न केवल प्रासंगिक अपितु जिज्ञासा और शोध का विषय है। अपने व्याकरण, शब्दभण्डार और सृजनक्षमता से संस्कृत आज भारत ही नहीं विश्वसमुदाय की ग्राह्य बन चुकी है।

संस्कृत अपने आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, साहित्यिक, दार्शनिक, नैतिक, तकनीकी, कलात्मक और व्याकरणिक ज्ञानभण्डार से विश्वभर के जिज्ञासुओं को आकर्षित कर रही है। वेद से उपनिषद और व्याकरण से विज्ञान तक विविध विषयों के अध्येता संसार के हर कोने में संस्कृताराधना कर रहे हैं। इसे मृत, प्राचीन या अध्यात्म तक सीमित बताने वालों को संस्कृत अध्येताओं की बढ़ती संख्या स्वयमेव कूपमण्डूक प्रमाणित कर देती है। सुप्रसिद्ध मानवविद् और मनोवैज्ञानिक हरबर्ट स्पैन्सर की ''सरवाइवल ऑफ द फिटस्ट'' यानि 'समायोजित की उत्तरजीविता' उक्ति संस्कृत भाषा पर पूरी तरह सटीक बैठती है। संस्कृत की प्रशस्ति में आर्थर शोपेनहावर, वॉरेन हेस्टिंग्स, वॉल्टेयर, सर विलियम जॉन्स आदि की उक्तियाँ पुरानी हो चली है। आज इसके प्रशंसकों की गिनती नामों नहीं; संस्थानों, विश्वविद्यालयों, देशों और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय तक व्यापक है। इसलिए संस्कृत के भारतीय अनुशास्ताओं के लिए हीनता और संकीर्णता से बाहर आकर संस्कृतगौरव से अभिभूत होने का समय आ चुका है। भारत की सरकार संस्कृत को उसके गौरवानुरूप स्थान सुनिश्चित करने के लिए आगे बढ़ रही है। इस परिवेश में समस्त संस्कृतानुरागी निःशंक होकर स्तोत्रपाठ, यागानुष्ठान, आयुर्वेद, योग, अनुसंधान, विज्ञान, कम्प्यूटर, प्रबन्धन, तकनीक, साहित्य, दर्शन, अध्यात्म इत्यादि अन्यान्य माध्यमों से संसार के संतसमानस के आधि-व्याधि उपशमन और अभ्युदय-निःश्रेयस समाधान के लिए स्वयं को प्रस्तुत करें।

बीजशब्द - देववाणी, आदिभाषा, शोधभाषा, अनुसन्धानभाषा, वैज्ञानिकभाषा।

परिचय

विश्व की सर्वाधिक प्राचीन, शुद्ध, सक्षम, जीवन्त, नियमित, वैज्ञानिक, व्याकरणसम्मत और भारत तथा विश्व की अनेक प्रमुख भाषाओं की जननी संस्कृत; अपने नाम और प्रभाव की दृष्टि से आज किसी भी जागृत और भविष्योन्मुखी व्यक्ति,

समाज या देश के लिए परिचयापेक्षी नहीं है। संसार की दमतोड़ती और विलुप्त होती बोलियों और भाषाओं के बीच भी यह चिरपुरातन भाषा यदि सद्यःयौवना की तरह आकर्षण, सौन्दर्य, सृजन और सम्भावना से आप्लावित है तो यह इसकी रगों में प्रवाहमान दैवी शक्ति और चिरसंजीवनी रचनात्मकता का ही प्रसाद है। आज भारत ही नही; प्रत्युत अखिल विश्व का महत्त्वाकांक्षी समाज अपने बहुविध कार्यव्यवहारों के लिए एक से बढ़कर दूसरे उपयोगी, सरल, सहज, सक्षम और सुरक्षित माध्यम की खोज में दिन-रात एक कर रहा है। ऐसे में यदि अमेरिका, यूरोप, ऑष्ट्रेलिया, रूस आदि विकसित देशों में संस्कृत के प्रति रुझान बढ़ रहा है तो यह इस भाषा और इसकी क्षमताओं के अभिज्ञान का संकेत है। आवश्यकता इस बात की है कि भारतवर्ष भी इस देवभाषा में निहित सम्भावनाओं को समझे और अपनी संस्कृति की इस अमूल्य विरासत संरक्षण-संवर्धन के लिए प्रयासरत हो।

संस्कृत की क्षमता और सम्भावनाओं की संस्तुतियाँ मात्र श्रद्धाविगलित आवेश नहीं; अपितु शोधनिःस्सृत तथ्यों पर आधारित आकलन हैं। संस्कृत की सबसे बड़ी शक्ति इसका अतुलित शब्दभण्डार है, जिसके आधार पर यह तमाम भावों और प्रसंगों की याथातथ्य प्रस्तुति में सक्षम है। विश्वजाल पर अपलोडिड वैदिक और लौकिक साहित्य की शब्दगणना के अनुसार संस्कृत में प्रयुक्त शब्दों की कुल संख्या लगभग **102** अरब, **78** करोड़ **50** लाख है। अभी तक अप्राप्य और इंटरनेट पर अनुपलब्ध वैदिक संहिताओं की शाखाओं, उनके ब्राह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों, स्मृतियों, दर्शनों, व उनके भाष्यों तथा बड़ी संख्या में ज्ञात किन्तु अल्पप्रचलित ग्रन्थ; जो अभी विश्वजाल पर उपलब्ध नहीं कराए गए हैं; उनकी शब्द संख्या मिलाकर संस्कृत की शब्द संख्या विश्व की समस्त आधुनिक भाषाओं से अधिक हो सकती है।

ज्ञातव्य है कि संस्कृत शब्दराशि की तुलना में आज की सर्वाधिक प्रचलित और सक्षम मानी जाने वाली अंग्रेज़ी में प्रयुक्त शब्दसंख्या मात्र **10** करोड़ **25** लाख **10** हज़ार नौ सौ अस्सी है। यह संख्या भी अकेले अंग्रेज़ी की नहीं है बल्कि इसमें लैटिन, ग्रीक, जर्मन और डच सहित विश्व की उन तमाम भाषाओं के शब्द शामिल हैं जिनसे अंग्रेज़ी शब्दग्रहण करती रही है और जिन भाषाक्षेत्रों में इस का व्यवहार होता है। इस क्रम में यह जानना भी रुचिकर है कि **2017** में प्रकाशित ऑक्सफॉर्ड अंग्रेज़ी शब्दकोश में मात्र **2** लाख **80** हज़ार शब्द हैं। इस तुलना से शब्दसंख्या और विषय वैविध्य के दृष्टिकोणों से संस्कृत की महत्ता सुस्पष्ट हो जाती है। इनके अतिरिक्त भाषाई उत्कृष्टता और क्षमता के वर्णव्यवस्था, स्वरसंख्या, शब्दनिर्माण-क्षमता, काव्यात्मकता, शुद्धता, वैज्ञानिकता, व्याकरणसम्मतता और संधारणीयता आदि दृष्टियों से भी संस्कृत विश्व की सर्वाधिक सक्षम, जीवन्त और भविष्योन्मुखी भाषा है।

शोधविधि

प्रस्तुत शोधकार्य की प्रकृति तुलनात्मक है जिसमें सुदूर अतीत से मध्यकाल तक संस्कृत के प्राधान्य, उपयोगिता और प्रचलन का विवरण संग्रहीत है। दूसरी ओर, संस्कृत की वर्तमान स्थिति और भावी संभावनाओं का तथ्यात्मक विवेचना है। शोधपत्र के विश्लेषणखण्ड में इन तथ्यों का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। विश्लेषण के परिणामों का उल्लेख शोध के सारांश में अंकित है।

शोधसामग्री

ऐतिहासिक दृष्टि से संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। यह वेद और वैदिक शाखाओं की भाषा है। वेदों के काल के विषय में भारतीय और विदेशी विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं। ऐसा होने पर भी वेद; विशेषतः ऋग्वेद को निर्विवाद रूप से संसार की प्रथम पुस्तक माना जाता है। चार वेदों की **1131** शाखाओं के अतिरिक्त इनके ब्राह्मणग्रन्थ **(12** उपलब्ध**)**, आरण्यकग्रन्थ **(08** उपलब्ध**)**, उपनिषदग्रन्थ **(**प्रामाणिक **11,** कुल संख्या **108$)** प्रातिशाख्य **(04** उपलब्ध**), 04** उपवेद **06** वेदांग, **21** स्मृतियाँ भी वैदिक साहित्य के अभिन्न अंग हैं। इन सभी ग्रन्थों की भाषा संस्कृत है। इससे सिद्ध है कि संस्कृत विश्व की सर्वप्राचीन भाषा है।

आन्तरिक रूप से शब्दों की प्रकृति, यौगिक अर्थतत्त्व, भाव की व्यापकता और व्याकरण की संरचना की दृष्टि से संस्कृत को वैदिक और लौकिक; इन दो कोटियों में रखा जाता है। इनमें से वेद, ब्राह्मण और आरण्यक पूर्णतः वैदिक संस्कृत में निबद्ध हैं। उपनिषदों की भाषा इन दो भाषा प्रकारों की प्रस्थानबिन्दु कही जा सकती है। वेदांगों और स्मृतियों की भाषा पूर्णतः पाणिनी **(400**ई.पू.**)** प्रणीत अष्टाध्यायी पर आधारित है। मात्र आठ अध्यायों में निबद्ध **3155** सूत्रों में अनुस्यूत व्याकरण सूत्रों से नियमित संस्कृत आज भी उन्हीं गुणों और विशेषताओं को धारण करती है, जिनके आश्रय पर अन्यान्य विषयों के असंख्य ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है। इनमें आयुर्वेद की चरक संहिता **(500**ई.पू.**)**, रसायन की नागार्जुन **(320**ई.पू.**)** कृत रसरत्नाकर, कामकला पर वात्स्यायन **(300**ई.**)**का कामशास्त्र, ज्योतिष व गणित की आर्यभट्ट

(476ई.) कृत आर्यभट्टीय तथा वराहमिहिर **(600ई.)** की बृहत्संहिता और भरद्वाजकृत यन्त्रसर्वस्व अथवा विमानशास्त्र आज भी विश्वभर के बुद्धिजीवियों को चमत्कृत करते हैं।

सुप्रसिद्ध मानवविद् और मनोवैज्ञानिक हरबर्ट स्पैन्सर की ''सरवाइवल ऑफ द फिटस्ट'' यानि समायोजित की उत्तरजीविता उक्ति संस्कृत भाषा पर पूरी तरह सटीक बैठती है। निर्विवादित रूप से मानवजाति की प्राचीनतम भाषा होने पर भी यह आज भी न केवल अपने स्वरूप को अक्षुण्ण रखे हुए है; अपितु प्राचीन साहित्य के अध्ययन, अध्यापन, शोध, नए साहित्य की रचना और उत्तर आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ कदमताल कर रही है। संस्कृत नेपाल की राजभाषा, भारत की आधिकारिक भाषा, उत्तराखण्ड की राजभाषा, कर्णाटक के मत्तूर व होसहल्ली, मध्यप्रदेश के झिरी, मोहद तथा बधुवार और राजस्थान के गनोडा की मातृभाषा है। इन गाँवों के प्रायः **95** प्रतिशत निवासी अपने दैनिक और आजीविका सम्बन्धी सभी व्यवहारों में संस्कृत भाषा का व्यवहार कर रहे हैं। अनेक ग़ैर सरकारी संगठन इस क्रम में अन्य ग्रामों और संस्थाओं को भी संस्कृतपरम्परा में दीक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें संस्कृत भारती, वदतु संस्कृतम् और अभ्युदय के नाम उल्लेखनीय हैं। **2011** की जनगणना के अनुसार संस्कृत भारत के **14** हज़ार **135** निवासियों की प्रथम भाषा और तकरीबन **70** लाख भारतीयों की द्वितीय भाषा है। आज जिस गति से संस्कृत अध्यात्म, योग, वास्तु, ज्योतिष, व्याकरण, शब्दनिर्माण, अनुवाद, साहित्य और मनोरंजन का माध्यम बन रही है, उससे इसके जीवन्त और प्रगतिशील रहने में कोई सन्देह नहीं है।

इसकी तुलना में संस्कृत की सबसे निकट कालखण्ड में ईरान के निकटवर्ती क्षेत्रों में जन्मी और प्रचलित हुई अवेस्ता; पहलवी, से पजांद और फिर फारसी का रूप धारणकर विलुप्त हो चुकी है। ग्रीक जो **1500** ई.पू. में दुनियाभर में विद्वानों और दार्शनिकों की भाषा के तौर पर प्रचलित थी; आज ग्रीस और साइप्रस के **1** करोड़ तीस लाख लोगों और यूरोपीय संघ की आधिकारिक भाषा है। **1000** ई.पू. में प्रचलित हिब्रू आज इज़राइल के **90** लाख यहूदियों की भाषा है। जबकि **75** ई.पू. में साहित्य और शिक्षा की भाषा रही लैटिन का प्रयोग अब पोलेण्ड और वेटिकन सिटी के **10** लाख लोग कर रहे हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इनमें से किसी भी भाषा का स्वरूप अपने आदिकाल के समकक्ष नहीं बचा है। लेकिन संस्कृत आज भी अपने निजरूप की गरिमा के साथ आधुनिकता की उद्बोधक बनी हुई है।

संस्कृत; अतीत का गौरव

अनादिकाल से ही विश्वभर के ज्ञानपिपासु संस्कृत भाषा, साहित्य और संस्कृति का अध्ययन करने भारतीय मनीषियों की शरण में आते रहे हैं। मनुस्मृति **(400** ई.पू.**)** के ''एतद्देश प्रसूतस्य**...02/20** की यह साक्षी इस तथ्य का प्रबल प्रमाण है। महाभारत, अष्टाध्यायी और स्मृतियों में अनेक प्रसंगों के माध्यम से वैदेशिकों के भारत से सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से वर्ष **1000** ई. में उज़्बेक यात्री अलबरूनी, **1292** में इटैलियन मार्को पोलो, **1333** में मोरक्कोवासी इब्न बतूता और **1420** में वेटिकन, इटली के निकोलो डी कोण्टी की भारतयात्रा और उनके विवरण पूर्णतः प्रमाणित और बहुशः सन्दर्भित हैं। इन विवरणों से भारत की सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति के साथ यहाँ की शिक्षा व्यवस्था, सभ्यता और संस्कृति पर के प्रामाणिक तथ्य प्राप्त होते हैं। संस्कृत और भारतीय ज्ञान-विज्ञान की ओर पश्चिमी बौद्धिकों के आकर्षण की एक अन्य साक्षी **1651** में भर्तृहरि **(07**वीं सदी**)** की रचनाओं के डच काव्यानुवाद से प्राप्त होती है। स्तुतिपरक संहिताओं, कर्मकाण्ड के उपदेष्टा ब्राह्मणों और संन्यास की ओर प्रवृत्त वानप्रस्थियों के सहचर आरण्यकों और अन्ततः वैराग्यसिक्त संन्यासियों संस्कृत के स्तुतिभाषा होने का भ्रम दूर हुआ।

1762 में एंक्यूटिल ड्यूपेरिन ने पेरिस की एक दूकान से संस्कृत की एक पोथी खरीदी। इसे पढ़ने और समझने के उद्देश्य से वह फ्रेंच ईस्ट इण्डिया कम्पनी के माध्यम से भारत आया। यहाँ उसने अनेक पाण्डुलिपियों का संग्रह किया; जिनमें से एक दारा शिकोह का उपनिषद संग्रह सिर्र-ए-अकबर भी था। **1801** में ड्यूपेरिन ने 'ओपनेखत' नाम से इसका फारसी, लेटिन और ग्रीक अनुवाद प्रकाशित कराया। जिसकी प्रशंसा में जर्मन दार्शनिक आर्थर शोपेनहावर ने अनेक प्रशस्तियाँ लिखीं। उसने उपनिषदों को मानवीय विद्वता की उच्चतम अभिव्यक्ति बताते हुए इनके ज्ञान और दर्शन को पश्चिम के लिए शाश्वत श्रद्धा का पात्र कहा। वह उपनिषदज्ञान को न केवल अपने जीवन; अपितु मृत्यु की भी परम सान्त्वना मानता था। शोपेनहावर के अनुसार उपनिषद का ज्ञान पूर्व की ओर से पूरी दुनिया को दिया गया शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ उपहार है।

1775 में फ्रेंच वैज्ञानिक वॉल्टेयर और उसके बाद बेली ने भारतीय खगोलग्रन्थों को अत्यन्त सटीक और प्रामाणिक बताया। **1785** में चार्ल्स विल्किन्स ने श्रीमद्भगवद्गीता का अनुवाद किया। **1789** में में कलकत्ता न्यायालय के

न्यायाधीश के पद पर नियुक्त सर विलियम जॉन्स द्वारा कालिदास **(400ई.)** कृत अभिज्ञान शाकुन्तलम् के अंग्रेज़ी अनुवाद के बाद तो इस दिशा में अभूवपूर्व प्रगति हुई। **1783** में कलकत्ता न्यायालय के न्यायाधीश के पद पर नियुक्त सर विलियम जॉन्स ने **1784** में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की। इसके उद्देश्यों में भारतीय ग्रन्थों का मूल्यांकन, उत्कृष्ट कृतियों का अनुवाद तथा प्रकाशन और माध्यम भाषा के रूप में संस्कृत के प्रचार करना था। संस्था के जुड़े अधिकारियों ने संस्कृत और अन्यान्य विषयों में प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा की मुक्तहृदय से प्रशंसा की।

संस्कृत भाषा की विशेषताओं से प्रभावित होकर सर विलियम जॉन्स ने **02** फरवरी **1886** को एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की बैठक में कहा कि संस्कृत एक अद्भुत भाषा है। यह ग्रीक से ज़्यादा पूर्ण, लैटिन से अधिक समृद्ध और विश्व की किसी भी अन्य भाषा से ज़्यादा परिष्कृत है। जॉन्स और विल्किन्स के प्रयासों से उत्प्रेरित होकर फ्रेंच विद्वान फोस्टर ने **1791** में शाकुन्तलम् का अपनी भाषा में अनुदीत किया। इसके तुरन्त बाद जॉहनन हर्डर कृत अभिज्ञान शाकुन्तलम् का एक और अनुवाद प्रकाशित हुआ। **1813** में हॉरेस एच. विल्सन ने मेघदूतम् का अंग्रेज़ी अनुवाद और **1819** में पहला संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्दकोश प्रकाशित कराया, जिनकी पूरे यूरोप में भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। उनके इन प्रयासों के परिणामस्वरूप ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में स्थापित बोडेन चेयर ऑफ संस्कृत के पहले प्रॉफेसर के लिए उनकी उम्मीदवारी सब पर भारी रही और वे **1960** तक इस पद पर स्थापित रहे। ज्ञातव्य है कि बोडेन चेअर ऑफ संस्कृत की स्थापना एक ब्रिटिश सेनाधिकारी लेफ्टि. कर्नल जॉसेफ बोडेन द्वारा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय को दान की गई सम्पत्ति से की गई, जिसका मूल्य **1929** में **27** हज़ार पॉण्ड था। यह परम्परा आज भी अनवरत जारी है और बोडेन चेअर ऑफ संस्कृत के माध्यम से संस्कृत अध्येताओं को प्रोत्साहित किया जा है।

संस्कृत; भविष्य की आकांक्षाओं की भाषा

आधुनिक भाषा के रूप में संस्कृत का भविष्य न केवल पूर्णतः सुरक्षित अपितु महत्वाकांक्षाओं से परिपूरित है। देश के शासकीय और प्रशासनिक दायरों में संस्कृत की स्वीकार्यता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। संस्कृत को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में नामित देश की आधिकारिक भाषाओं में स्थान दिया गया है। हाल ही में सरकार ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों और भारतीय प्रबन्धन संस्थानों में संस्कृत के विशेष अध्ययन का प्रस्ताव किया है। दिल्ली, मुम्बई और कानपुर के प्रौद्योगिकी संस्थानों और बैगलुरु तथा कोलकाता के प्रबन्धन संस्थानों में इसकी शुरुआत हो चुकी है। यहाँ भारतीय ज्ञान-विज्ञान और गीता में प्रबन्धन जैसे पाठ्यक्रमों की शुरुआत हो चुकी है। यह संस्कृत की बढ़ती मान्यता और महत्ता का स्पष्ट प्रमाण है। संस्कृत साहित्य की कृतियों के हिन्दी और विश्व की प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध हैं और इनकी संख्या लगातार बढ़ रही है। इन्हीं अनुवादों के माध्यम से संस्कृत के अन्यान्य शास्त्र संसार के कोने-कोने में उपलब्ध हैं और प्रशंसित हो रहे हैं।

भारत के सोलह विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा और सम्बद्ध विषयों के अध्ययन और शोध की व्यवस्था है। इनके अतिरिक्त मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा घोषित उत्कृष्ट अध्ययन संस्थानों, केन्द्रीय व राज्य विश्वविद्यालयों, सम्बद्ध महाविद्यालयों में भी संस्कृत अध्ययन की सुविधा है। इनके माध्यम से लगभग **04** करोड़ **32** लाख विद्यार्थी संस्कृत और सम्बद्ध विषयों का अध्ययन कर रहे हैं। भारत से बाहर अमेरिका, ऑष्ट्रेलिया, यूरोप और मध्यपूर्व के देशों में सभी स्तरों पर संस्कृत विषय में अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार संस्कृत के विदेशी अध्येताओं की संख्या लगभग सात मिलियन यानि **70** लाख है। अकेले जर्मनी के चौदह विश्वविद्यालयों में संस्कृत का अध्यापन होता है। यूरोप और ऑष्ट्रेलिया के स्कूलों की प्राथमिक कक्षाओं में संस्कृत अनिवार्य विषय के तौर पर शामिल की जा रही है। माना जा रहा है कि इससे विद्यार्थियों की स्मृति, उच्चारण, एकाग्रता और जटिल सन्दर्भों को समझने की क्षमता का विकास होगा। संस्कृत वाचन से तन्त्रिकातन्त्र के सक्रिय होने और सकारात्मक ऊर्जा के संचार का दावा भी किया जाता है। इन्हीं बिन्दुओं को सामने रखकर चिन्मय मिशन, वैदिक सेवा न्यास, महर्षि वेदविद्या प्रतिष्ठान, महर्षि महेश योगी संस्थान, इस्कॉन, प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान और गुरुकुलों के माध्यम से देश-विदेश में भी संस्कृत का प्रचार-प्रसार हो रहा है।

आज संस्कृत को कम्प्यूटर की डिजिटल या गणितीय प्रोग्रामिंग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा के रूप में ख्याति मिल रही है। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र में कम्प्यूटेशनल संस्कृत के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। नासा के वैज्ञानिक भी अगली पीढ़ी के कम्प्यूटरों और अन्तरिक्षयानों में संस्कृत की शब्दक्षमता, अचूक सम्प्रेषणीयता और व्याकरणीय सटीकता का प्रयोग करने का प्रयास कर रहे हैं। इस दृष्टि से रिक ब्रिक्स,

क्रिस्टोफर मिंकोवस्की, संस्कृत की शब्द सृजन क्षमता और सहज अर्थापत्ति के गुणों का प्रयोग वाक्क्षम या टॉकिंग मशीनों, यन्त्रमानवों या रोबोट और चिन्तनशील कम्प्यूटरों के आविष्कार के लिए किया जा सकता है। संस्कृत की तीव्र, सटीक और लचीली सम्प्रेषण क्षमता आने वाले समय की ज़रूरतों के अनुरूप है। इसलिए संस्कृत को भविष्यभाषा, विज्ञानभाषा और आजीविका की भाषा कहना कदापि अतिशयोक्ति नहीं है।

शोधसार

प्रस्तुत तथ्यों के प्रकाश में कहा जा सकता है कि मानस सभ्यता के सुदूर अतीत से सम्पर्क साधने का माध्यम रही संस्कृत अब सुदूर अन्तरिक्ष के अन्वेषण का माध्यम बनकर उभर रही है। यह विश्व की तमाम आधुनिक भाषाओं को जानने-समझने के साथ ही एक अत्याधुनिक समावेशी भाषा के उद्भव का स्रोत बन रही है। एक ओर संस्कृत योग द्वारा मानव के आन्तरिक आयामों को सुव्यवस्थित कर रही है तो दूसरी ओर विज्ञान द्वारा ब्रह्माण्डीय रहस्यों के समायोजन की साधिका के रूप में उभर रही है। संस्कृत स्तोत्रों का प्रयोग न केवल ध्यान साधना अपितु उच्चरक्तचाप, तनाव, अवसाद और अनेक मनोरोगों के निवारण के लिए किया जा रहा है। भारत और शेष विश्व में वैकल्पिक चिकित्सा, स्वस्थवृत्त, मन और मस्तिष्क के क्षमता विस्तार के लिए संस्कृत पर प्रयोग किए जा रहे हैं। स्थिति यह है कि आधुनिकता से जीर्ण मानवता आज आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तापों की शान्ति के लिए संस्कृत की शरण पाने के लिए उत्सुक हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

1. कांजीलाल, दिलीप कुमार, प्राचीन भारत में विमान, संस्कृत पुस्तक भण्डार, कोलकाता, **1955**
2. क्लार्क, जॉन जेम्स, ओरियण्टल एन्लाइटनमैण्ट, रुतलेज, लण्डन, **1997**
3. जॉन टी.के., रिसर्च एण्ड स्टडीज़ बाई वैस्टर्न मिश्नरीज़ एण्ड स्कॉलर्स ऑफ संस्कृत लैंग्वेज़ एण्ड लिटरेचर, सैण्ट थॉमस क्रिश्चियन एनसाईक्लोपीडिया ऑफ इण्डिया, वॉल्यूम **- 3, 2010.**
4. दत्त पण्डित भगवद्दत्त, वैस्टर्न इण्डोलॉजिस्ट, अ स्टडी इन माटिव्स, वैदिक ग्रन्थालय, अजमेर, **1940**
5. सिंह बलराम, झा गिरीश, सिंह उमेश, प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी, डी.के. प्रिंटवर्ल्ड लिमिटेड नई दिल्ली, **2012**
6. महर्षि दयानन्द सरस्वती, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, **1988**
7. यादव राजमंगल, अर्वाचीन संस्कृत साहित्य, जे.पी. पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, **2015**
8. लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय', भारतीय संस्कृति कोश, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, **1996.**
9. सिंह उमेश कुमार संस्कृत भाषा में निबद्ध दुर्लभ वैज्ञानिक ग्रन्थ, निकष, आई.एस.एस.एन. **2277:6826**, वॉल्यूम एक, इश्यू एक **2012**